मनोरमा
३० सितम्बर, ८५ वर्ष ६१, अंक १८
(द्वितीय पक्ष)

—मिठु मुखर्जी

आपसे मिलिए

प्रियदर्शिनी: कुशल नर्तकी ही नहीं, कुशल नृत्य-शिक्षिका भी

छाया : एम० राव

इन दिनों दक्षिण भारतीय नृत्यों में भरतनाट्यम की अपार लोकप्रियता के कारण काफी युवतियों का झुकाव इस ओर हो गया है और वे रंगमंच पर नृत्य करती हुई नजर आने लगी हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि कठोर अभ्यास, समर्पण और अपेक्षित अनुशासन के बिना भरतनाट्यम में पारंगत होना काफी दुष्कर है।

लेकिन तरुणी प्रियदर्शिनी ऐसी शौकिया नृत्य सीखनेवाली युवतियों से अलग है। वह पिछले नौ वर्षों से निरंतर अभ्यासरत है। यही कारण है कि आज नृत्य समीक्षकों को प्रियदर्शिनी में अपार संभावनाएं नजर आने लगी हैं।

नृत्य-कला से प्रतिबद्ध प्रियदर्शिनी की इस सफलता के लिए भरतनाट्यम शिक्षा केन्द्र 'कलामंडल' की गुरु थांकमणि कुट्टी के मातृवत स्नेह और कठिन परिश्रम को भुलाया नहीं जा सकता। प्रियदर्शिनी के मनोरम नृत्य की एक बड़ी विशेषता उसकी अभिनय निपुणता है।

जब प्रियदर्शिनी सिर्फ तीन वर्ष की बालिका थी, उसके पिता स्वर्गीय अशोक घोष ने उसे कलकत्ते के 'चिल्ड्रेंस लिटिल थियेटर' नामक संस्था में नृत्य सिखलाने के लिए भर्ती कर दिया जहां भरतनाट्यम मर्मज्ञ श्रीमती थांकमणि कुट्टी के भाई शंकर नारायण से उसने नृत्य की प्रारंभिक शिक्षा लेनी शुरू की। इस प्रख्यात दल के साथ घूमते हुए बम्बई, दिल्ली, मद्रास और बंगलौर के अतिरिक्त अन्य छोटे-बड़े शहरों के मंचों पर उसने नृत्य-कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जिस चिल्ड्रेंस थियेटर में कभी वह नृत्य सीखा करती थी, प्रियदर्शिनी आज वहीं नृत्य-शिक्षिका बन गयी है। इसे वह अपनी एक महत् उपलब्धि मानती है। उसने इसी वर्ष सेंट जेवियर्स कालेज, कलकत्ता से बी० ए० (आनर्स) की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है।

प्रियदर्शिनी को अपनी मां वीणा घोष से भी काफी कुछ सीखने को मिला। वे खुद छठें दशक में रवीन्द्र-नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना थीं। संगीतप्रधान पारिवारिक वातावरण भी उसके व्यक्तित्व के निर्माण के लिए काफी सहायक हुआ। इसलिए अगर यह कहें कि उसमें कलात्मक प्रतिभा जन्मजात है, तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

१९७६ में उसने भरतनाट्य के साथ ही मोहिनीअट्टम में भी निपुणता प्राप्त कर ली। उसकी लुभावनी कोमल काया, बांकी चितवन और खिलता हुआ चेहरा सचमुच उसके नाम को ही चरितार्थ करता है।

भरतनाट्यम के सुविदित वर्णम्, पदम और तिल्लाना नृत्यपदों की प्रस्तुति में प्रियदर्शिनी का नयनाभिराम अंग-संचालन, छंदोमय पदसंचालन और प्राणवंत अभिनयकुशलता नृत्यरसिकों को अनायास ही प्रशंसामुखर करती है। जिस अल्पावधि में उसके मन-प्राण में यह नृत्य रच-बस गया है, उससे यही प्रतीत होता है कि एकमात्र कला ही भौगोलिक दूरियों को पाट हमें एक-दूसरे के और निकट लाने में सक्षम है।